'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ४७ | वाराणसी, मंगलवार, २१ अप्रैल, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

चुरू (राज०) २२-३-'५९

हमारा आन्दोलन दुनिया में शान्ति और करुणा की प्रतिष्ठा के लिए चल रहा है।

डर से अच्छा काम भी नहीं करना है

हम बिहार में घूमते थे, तब हमारे पास शिकायत आयी कि कुछ कार्यकर्ताओं ने लोगों पर दबाव डाल कर भूमि-दान प्राप्त किया। उन्होंने कहा कि 'बाबा प्रेम से जमीन माँगता है, इसलिए दे दो। नहीं तो तुम्हारी जमीन सरकार तो छीन ही लेगी, उसमें खतरा है।' कार्यकर्ताओं द्वारा इस प्रकार दबाव दिये जाने की चर्चाएँ सुनकर मैंने एक आम सभा में यह जाहिर कर दिया कि 'अगर कोई दबाव डालकर आप से जमीन माँगे, तो आप हरगिज मत दीजिए। हम दबाव से भूदान प्राप्त करना नहीं चाहते।' अगर कोई दबाव से जमीन माँगे और कोई हमें दबकर जमीन दे तो हम वह जमीन नहीं चाहते। हम निर्भयता बढ़ाना चाहते हैं।

भारत में भय कुछ कम नहीं है। दुनिया के दूसरे देशों में भी इतना भय छाया हुआ है कि हर बात भय से ही होती है। रशिया अमेरिका से डरता है और अमेरिका रशिया से डरता है। इसी डर के कारण ऐसे भयानक शस्त्र बना लिये गये हैं कि शेर और बबरों से बचने के लिए भी वैसे औजारों की जरूरत नहीं पड़ी थी। मनुष्य ने मनुष्य से ही बचने के लिए कैसे भयानक शस्त्रास्त्र तैयार किये हैं?

भूदान-यज्ञ में जो कोई डराकर जमीन माँगे, उसे हरगिज जमीन नहीं देनी चाहिए। जो डर से जमीन दी जायगी, वह निकम्मी होगी। हम बिलकुल निर्भय होकर आप लोगों में घूमते हैं। हमारी बात आप न मानने के लिए भी बिलकुल मुक्त हैं। आप निर्भय होकर रहें, यही हम चाहते हैं।

हमारी बात अगर आपको नहीं जँचती है, तो हरगिज नहीं माननी चाहिए। हम बार-बार समझायेंगे। हम धीरज रखते हैं। यह परमेश्वर की दुनिया है। जिस वक्त वह सद्विचार सुझायेगा, वही सूझेगा। वह परमेश्वर की मालकियत है। उसने हमको यह सद्विचार सुझाया है, वही हमको घुमा रहा है। जिस क्षण वह हमें उठायेगा, उसी क्षण हम जायेंगे और ऐसी कोई जिम्मेवारी हम पर नहीं है, परमेश्वर पर है। इसलिए वह सबको प्रेरणा देनेवाला है। हम सब्र रखकर समझाते जा रहे हैं।

आत्मनिर्भर बनें

स्वराज्य मिलने के बाद हमने क्या किया है? लोकशाही बनायी। कुछ मनुष्यों को चुनकर सरकार में भेज दिया और उन्हें सेवा का अधिकार दे दिया। इतने भर से क्या हमारा कर्तव्य पूरा हो गया? अब हम सेवा के सारे काम सरकार के जरिये कराना चाहते हैं। भूमि-सुधार करना है, तो सरकार करेगी, व्यापार में कुछ नियमन करना है, तो सरकार करेगी, उद्योगों को बढ़ाना हो, तो सरकार बढ़ायेगी, खादी-ग्रामोद्योगों की स्थापना करनी हो, तो सरकार करेगी, समाज-सुधार का काम करना हो, तो सरकार करेगी, तालीम सरकार देगी, सामाजिक नियमन, आर्थिक नियम—सब कुछ सरकार करेगी। हर चीज सरकार करे और हमको सुखी करे। यह लोकशाही का बाहर का आकार भले ही हो, लेकिन यह असली लोकशाही नहीं है।

लोगों को अपना काम अपने हाथों से करना चाहिए और सरकार के ऊपर कम-से-कम कामों की जिम्मेवारी रखनी चाहिए, तभी सच्ची लोकशाही आयेगी। आज होता क्या है? हिन्दुस्तान सरकार का बजट ६०० करोड़ रुपयों का है। उसमें से ३०० करोड़ रुपया सेना पर खर्च होता है। हमारी सेवा के लिए भी ५५ लाख नौकर हैं। उन (नौकरों) पर २०० करोड़ का खर्च होता है। एक सौ करोड़ रुपयों का अनाज बाहर से मँगवाया जाता है। हमारी कैसी विचित्र हालत है! ५५ लाख नौकर रखे हैं, उनका एक मिडिल क्लास तैयार हो गया। यह वर्ग सेवा करेगा, पर उत्पादन नहीं करेगा। जीवनमान ऊँचा, इज्जत ज्यादा, उत्पादन कुछ नहीं! ऐसा है यह वर्ग!

५५ लाख नौकरों का क्या अर्थ होता है? ५५ लाख परिवार। हर नौकर के साथ उसका परिवार होता है। हिन्दुस्तान में करीब सात-साढ़े सात करोड़ परिवार हैं। उनकी सेवा करने के लिए ५५ लाख परिवारों को रखा है। इसका मतलब यह

होता है कि १३ परिवारों की सेवा के लिए १ परिवार! मुझे लगता है आगे चलकर इन नौकरों की संख्या एक करोड़ की हो जायगी। हमारे बचपन में ५२ लाख बाबा थे। उनका भार जनता पर ही पड़ता है। वे खाते हैं। और मेहनत-मजदूरी करते नहीं। ये ५२ लाख बेकार और ५५ लाख नौकर। और फिर भी सेवा ठीक से नहीं होती है और इसलिए और भी नौकर बढ़ाने की बात करते हैं। मान लीजिये, १३०० परिवारों का एक कस्बा है। उसकी जनसंख्या ५-६ हजार है और इनकी सेवा के लिए १०० परिवार सरकारी नौकर हैं। आप कहेंगे कि इन १३ सौ परिवारों की सेवा के लिए १ सौ परिवारों को सम्हालना पड़ता है, बहुत भारी बोझ है। जब तक हम नौकरों की गरज कम नहीं करते, तब तक सुखी होनेवाले नहीं हैं। नौकर बढ़ते ही मध्यम वर्ग बढ़ता है। फिर उनकी ओर से यह शिकायत होती है कि हमको तनखा कम मिलती है। फिर किसीकी तनख्वाह ज्यादा होगी और किसी की कम। इससे एक सन्तुष्ट मध्यम वर्ग और दूसरा असन्तुष्ट मध्यम वर्ग बनेगा। अपने देश में कुछ लोग असन्तुष्ट हैं, इसीलिए जागृति है। लेकिन कल अगर असंतुष्ट वर्ग को जितना चाहिए, उतना दे भी दें, तो भी सेवा का इन्तजाम ठीक नहीं हो सकेगा; क्योंकि असंतुष्ट लोगों में से अधिकांश ज्यादा पढ़े लिखे हैं। उन्हें सम्पत्ति ज्यादा मिलती है, उनमें बुद्धिमत्ता ज्यादा है। इस लिए फिर ये नीचेवाली जमात की बात क्यों सुनेंगे भला?

लियाकतअली ने पाकिस्तान में अपने प्रधान मंत्री काल में कहा था कि चाहे हम लोगों को भूखा क्यों न रहना पड़े, लेकिन हम हमारा डिफेन्स मजबूत करेंगे। करीब-करीब ऐसी ही भाषा सारे देश के नेता बोला करते हैं। वे कहते हैं कि देश का डिफेन्स इतना महत्त्व रखता है कि उसके लिए हम भूखे रहने को राजी हैं। मेरे मन में सवाल आता है, हम याने कौन? लियाकतअली भूखा रहेगा या वहाँ के जो गरीब लोग हैं, उन्हें भूखा रहना पड़ेगा? देश के रक्षण के लिए अगर लोगों को भूखों मरना पड़े, तो मरने देंगे। लोक-जीवन की परवाह न करते हुए अमुक मात्रा में डिफेन्स पर तो खर्च करेंगे ही!

फौज और उत्पादन

जनरल तिमैय्या क्या कहता है? वह कहता है कि सिपाहियों से दूसरा काम लेना गलत है। सेना तो लड़ाई के लिए है। सैनिक 'राइट-लेफ्ट राइट-लेफ्ट' करते हैं। क्या उनसे हल चलवायेंगे? हल चलाने से मिलिटरी का स्पिरिट कम होता है। एक गाँव में बहुत बारीक साड़ी बुननेवाले कुछ बुनकर थे। हमने उनसे पूछा, क्या तुमको सालभर काम मिल जाता है? उन्होंने कहा, नहीं मिलता। खेती में या दूसरे काम में जाते हो? उन्होंने जवाब दिया, नहीं जाते। हमने पूछा, क्यों? तो बोले, अगर हम खेती में काम करने जायेंगे, तो हमारे ये हाथ एफ बन जायेंगे और फिर यह कला का काम नहीं बनेगा। तब मैंने कहा कि शायद उनकी बात सही है! मैंने जब खेती में काम किया, तो ठंढ के दिनों में मेरे भी हाथ फटते थे। इस पर से मैंने सोचा कि कला का काम करने जायँ तो हो सकता है कि तार टूट जाय। तिमैय्या भी ऐसे ही बोलता है। सैनिकों से उत्पादन आदि का दूसरा काम लेने से मनुष्य मारने की जो कला है, उसमें वे प्रवीण नहीं रह सकेंगे। विशेष प्रसंग को छोड़कर सिपाहियों से वैसा काम नहीं लेना चाहिए। जैसे साँड़ होते हैं न? साँड़ का भी खास काम होता है। वह उसे छोड़कर दूसरा कोई काम नहीं करेगा। जुताई का काम बैल करेंगे, पर साँड़ नहीं करेगा। साँड़ को जोतेंगे, तो वह उसका काम नहीं कर सकेगा। उसी तरह मिलिटरी के लोगों को सिविल काम दिया जायगा, तो वे ऐन मौके पर दगा दे देंगे। याने उसने माँग की कि मिलिटरी से बहुत ज्यादा दूसरे काम की आशा आप नहीं कर सकते। इसका मतलब यह है कि मिलिटरी बिल्कुल सुरक्षित रहेगी और जब आवश्यकता पड़ेगी, तभी उसका उपयोग किया जायेगा।

जलगाँव की जेल में हमको दस-पाँच दिन के लिए रखा गया। वहाँ के जेलर हमें स्नान के लिए बाहर ले आते थे। वहाँ स्नान करने के स्थान के पास ही चार-पाँच बाल्टियाँ रखी थीं 'फायर' की। लेकिन हमको स्नान के लिए बाल्टी नहीं मिलती थी। हमने कहा कि बाल्टी स्नान के लिए दे दीजिये। लेकिन उन्होंने नहीं दी। बाजार से एक बाल्टी लायी। उसीसे सबको स्नान करना पड़ता था। लेकिन वे जो चार-पाँच बाल्टियाँ वहाँ रखी थीं, वह नहीं देते थे; क्योंकि वह फायर की थीं। फायरवाली बाल्टी स्नान के लिए नहीं देते हैं, वैसे ही सेना का भी दूसरे कामों में उपयोग नहीं कर सकते। वे खाते हैं और 'राईट-लेफ्ट' करते हैं। पूछा जाता है कि क्या ये तगड़े हैं? अच्छा, बहुत अच्छा! ये हमारी रक्षा कर सकेंगे? खाना-पीना तो ठीक है? ठीक है। शराब वगैरह की सहूलियत है कि नहीं? हमें तो मालूम नहीं है, लेकिन किसीने हमें बताया था कि शराब-बंदी करने के बाद भी मिलिटरी के लिए वह खुली रहेगी। इस बात में सत्यांश कितना है, यह तो पता नहीं, लेकिन यदि एक अंश भी इसमें सचाई है, तो यह बहुत खतरनाक बात है। दूसरों के लिए शराब-बंदी लागू हो, लेकिन मिलिटरी के लिए वह लागू नहीं होगी! यह तो रावण की सेना हो गयी। देश की सुरक्षा के वास्ते जिन सैनिकों को रखा जाता है, उनके लिए लड़ाई के मोर्चे पर कन्याएँ भी सप्लाई की जाती हैं। फिर वार-बेबीज war-babies युद्ध-संतति-होती है। देश की रक्षा के वास्ते बहुत बड़ा त्याग कर भारी खतरा उठाते हैं, इस वास्ते उनको भोग के दूसरे-तीसरे साधन सप्लाई किये जाने चाहिए! ऐशोआराम मिलना चाहिए!! यह मैं सिर्फ अपनी ही सरकार की टीका नहीं कर रहा हूँ, कुल दुनिया की मिलिटरी के लिए यही चल रहा है। ऐसी हालत में भी हम अपने को आजाद समझते हैं, तो इससे बदतर गुलामी और दूसरी क्या हो सकती है?

राजाजी और विनोबा

मिलिटरी के खिलाफ आवाज उठानेवाले आज विनोबा और राजाजी दो ही व्यक्ति हैं। राजाजी चिल्लाते हैं कि इतनी मिलिटरी क्यों रखी है? वे मुत्सद्दी हैं, राजकारण में धुरंधर हैं। वे एक जमाने में गवर्नर-जनरल थे। इसलिए भी वे सरकार को यह कह सकते हैं। लेकिन मैं सरकार को यह किस मुँह से कहूँ? जब हम हमारे देश की अन्तर्गत रक्षा बिना सेना के भी कर सकें, तभी यह बात मैं सरकार के आगे रख सकता हूँ।

आपके राजस्थान में सरकार ने तीस हजार सिपाही रखे। मैं सिर्फ तीन हजार शांति-सैनिकों की माँग करता हूँ। यहाँ राजस्थान में तीस लाख परिवार हैं। तीस लाख परिवारों की रक्षा के वास्ते तीस हजार पुलिस-परिवार याने सौ परिवार के पीछे एक परिवार पड़ेगा। क्या हम इतने चोर और डाकू बन गये हैं? मैंने कहा कि भाई यह काम तो हम स्वयं करें। इसके लिए इतनी पुलिस रखने की क्या जरूरत है? अपने

झगड़े कम करने तथा शांति की स्थापना करने के लिए शांति-सैनिक खड़े हो जायँ। वे हर घर से परिचय रखें, गाँव-गाँव में घूमें और कहीं कोई झगड़ा हो या और दूसरा कोई सवाल हो, तो उसको निपटा लें। पुलिस के बदले शांति-सैनिक आगे आयें। मान लीजिये, राजस्थान में इतना काम आपने किया तो कल गोकुलभाई आपके चीफ मिनिस्टर को कह सकते हैं कि आपकी पुलिस के लिए इतना काम नहीं है, तब आप नाहक ही इतनी पुलिस क्यों रखते हैं? मुख्य मंत्री कहेंगे कि हाँ, ठीक है। कोर्ट में केसेस भी कम आये। झगड़े भी रुके हैं, इसलिए अब इतने पुलिसों का क्या किया जाय? तब हम कहेंगे कि उनको १०-१५ एकड़ भूमि दान दे दी जाय और करें वे काश्त।

अपने यहाँ दंगा-फसाद होते हैं, गोलियाँ भी चलती हैं और हम ऐसे ही देखते रहते हैं। यह तो एक शर्म की बात है। जयपुर, बम्बई, अहमदाबाद, तमिलनाड, रामनाथपुरम्, कलकत्ता, कानपुर और पंजाब में कुछ मसले होते हैं तो गोलियाँ चलती हैं। क्या यह स्वराज्य है? प्रजा को महसूस करना चाहिए कि यह हमारा स्वराज्य है। इतने बड़े देश में कई मसले हो सकते हैं, मतभेद हो सकते हैं, कशमकश भी हो सकती है—यह हमें मंजूर है, लेकिन बीच में हिंसा की क्या जरूरत है? लोगों की तरफ से पत्थर क्यों चलने चाहिए और सरकार की ओर से गोलियाँ क्यों चलनी चाहिए? हम खामोश रहें और कहते चले जायँ कि सेना पर खर्च मत करो तो सरकार हमको कह सकती है कि तुमको कहने का अधिकार नहीं है। यदि हम अन्तर्गत शांति कर पायें तो फिर बाहरी शांति का सवाल आता नहीं है। इसलिए अगर एक बार हम यह सिद्ध कर दें कि आन्तरिक मामलों में पुलिस की और सेना की जरूरत नहीं है, हम शांति से अपने देश के मसले हल कर सकते हैं, तो हमारी नैतिक शक्ति बढ़ती है और इण्टर-नेशनल क्षेत्र में हमारी आवाज बुलन्द होती है। परिणामतः सारी दुनिया शस्त्र-संन्यास करने में समर्थक हो सकती है।

राजस्थान से उम्मीद

अजमेर में एक हजार शांति-सैनिक बने, नौ सौ वहाँ हाजिर थे और सवा सौ सैनिक नहीं आये थे। मैंने अपेक्षा की थी पाँच सौ सैनिकों की, लेकिन एक हजार शांति-सैनिक बन गये। यह आरम्भ हुआ, तो दिल को तसल्ली होती है और लगता है कि यह चीज बन सकती है। इस सेना में सारे पक्ष-मुक्त ही लोग होने चाहिए, ऐसी भी आशा करते थे। पक्ष से कोई पक्षपात नहीं रहेगा। इलेक्शन में नहीं पड़ेगा। किसी पक्ष का अगर कोई मेंबर रहे, तो रह सकता है। अब दरवाजा खुल गया है।

मैं आशा करता हूँ कि राजस्थान में तीन हजार शांति-सैनिक प्राप्त होंगे। उन्हें सरकार से तनखा नहीं दिलवानी है। नहीं तो वे भी उन ५५ लाख नौकरों में आ जायेंगे। लोग अपनी संमति के लिए घर-घर से एक-एक मुट्ठी अनाज दें। एक मुट्ठी भर अनाज से देश की रक्षा और दुनिया में शांति-स्थापना हो सकती है। राजस्थानवालों को मेरा यह आवाहन है। यहाँ के लोगों में शौर्य है, भक्ति है और व्यवस्था-शक्ति भी है। जहाँ दूसरे लोग व्यापार नहीं कर पाते, वहाँ ये अच्छी तरह से व्यापार करते हैं। यह इन्तजाम की जो शक्ति है, उसका पूरा उपयोग होगा। पाँच हजार मनुष्यों की सेवा के लिए एक मनुष्य—इस हिसाब से यहाँ पर तीन हजार शांति-सैनिक खड़े हो जायँ। इसकी सम्मति के तौर पर हर घर में सर्वोदय-पात्र रखा जायेगा। उसमें एक मुट्ठीभर अनाज बच्चे के हाथ से डलवाते हैं। ऐसा हर गाँववाले कर सकते हैं, तो हिन्दुस्तान में एक शक्ति पैदा होगी। उससे देश में लोकशाही का सच्चा नमूना प्रकट करेंगे और हिन्दुस्तान को और कुल दुनिया को बचा सकेंगे।

व्यापारियों से

एक भाई हम से मिलने के लिए आया था। उसने "राईस रूट्स" नाम की एक किताब लिखी है। उसमें जिक्र है कि इंडोनेशिया ने ऐसा ही काम किया था। हर घर से एक चम्मच भर अनाज प्राप्त कर बड़ा भारी काम किया। उसने कहा कि आपने भारत में जो विचार निकाला है, वह विचार फलाने-फलाने देश में अमल में आया और उससे इतना काम हो सका। भारत में पहले से ही दूसरों के वास्ते कुछ-न-कुछ देने के बाद खाने का रिवाज है, लेकिन आज उसका क्रान्तिकारक उपयोग होना चाहिए। कबूतरों को खिलाना एक बात है और शांति की ताकत बढ़ाने के लिए और सर्वोदय-विचार के लिए तथा सेवक-समाज के लिए उसका उपयोग करना दूसरी बात है। यह हम कहें कि हमारे देश में ७५ हजार सेवा-सैनिक खड़े किये और उनके वास्ते सरकारी मदद नहीं ली, लोगों से मदद ली—तो वह एक अनोखी चीज है। इतने लोगों के जरिये काम लेने की कला या तो सरकार से सधती है या व्यापारियों से। व्यापारी स्वार्थी कामों में आते हैं, परमार्थ के काम में नहीं आते। इसलिए उन्हें मैं पुकार रहा हूँ। अगर हम प्रेम के जरिये इस काम को करते हैं तो यह सारी दुनिया के लिए एक बेमिसाल मिसाल होगी।

हमारा देश स्वतन्त्र है, इसलिए अब हमें 'विश्व-नागरिक' बनना चाहिए। विद्यार्थियों के लिए यह एक अत्यन्त उत्साह की बात है। मैं यह चाहता हूँ कि विद्यार्थी इस विचार का ठीक से अध्ययन करें।

ग्रामपंचायतों से पहले

एक विद्यार्थी ने पूछा है कि जमीन सरकार के द्वारा ही क्यों नहीं दी जाती? अपने देश की जन-संख्या बढ़ रही है, दूसरे भी बहुत सारे सवाल हैं। उन सबका निबटारा करना है, तो लोग अपना-अपना कर्तव्य पूरा करें—याने विकेंद्रित योजना हो जाय। लोग कहेंगे कि विकेन्द्रित योजना के लिए सरकार ने जगह-जगह पर ग्राम-पंचायतें बनायी हैं और आप भी वैसा ही चाहते हैं, तो दोनों में फर्क क्या है? हाँ, ठीक है, सरकार एक सेंटर से ठीक तरह से शोषण नहीं कर सकती है, इसलिए वह जगह-जगह ग्राम-पंचायतें निर्माण कर रही है, ताकि विकेन्द्रित शोषण हो सके। योजनापूर्वक शोषण हो सके, इसके लिए यह योजना सरकार ने बनायी है। ऐसा इरादा रखकर ही सरकार काम कर रही है, ऐसा मैं नहीं कहता हूँ, लेकिन आज ऐसा हो रहा है।

इन्फ्लुएंजा के दिन मुझे याद आते हैं। एक माता का पुत्र बीमार था। डाक्टर ने कहा कि वह दुरुस्त हो रहा है। पर वह ठीक होने के बजाय और ज्यादा बीमार हो गया। दो दिन के बाद डॉक्टर फिर देखने आया और पूछा कि मैंने तुम्हें इसे खाना खिलाने के लिए मना किया था। फिर भी क्या तुमने इसे कुछ खिला दिया है? माँ ने कहा—यह कई दिनों से भूखा था। इस-

लिए खाना माँग रहा था। इसकी तबीयत ठीक होते देखकर मैंने कुछ खिला दिया है। तब डॉक्टर ने कहा—अब यह नहीं बचेगा। आखिर लड़का मर गया। माँ का इरादा तो नहीं था कि लड़के को मारा जाय; लेकिन काम ऐसा किया कि वह मर गया। इसलिए इरादा न होना इतना ही बस नहीं है।

राज्यकर्ताओं को सोचना पड़ता है कि अपनी कृति का परिणाम क्या होता है? जब तक भूमि-समस्या का हल नहीं हुआ हो, तब तक ग्रामपंचायत बनाना शोषण की ही योजना करना है। इसलिए पहले भूमि का सवाल हल करते हैं, तो वह सेवा का साधन बनेगी, अन्यथा शोषण का साधन बनेगी।

लोकशाही की दिशा में

आज तो हमने सारे काम सरकार को सौंप दिये हैं। हिंदू स्त्रियों को मालूम है कि शादी में जितनी विधि होती है, वह कुल-की-कुल पुरुष करते हैं। स्त्री पुरुष के हाथ को हाथ लगाती है। मंत्र, उदक—सब पुरुष करेगा और स्त्री उसका हाथ पकड़ेगी, ताकि इसमें मैं हूँ मेरा साथ है, यह जाहिर हो जाय। ऐसे ही सरकार जो भी काम करेगी, हम उसका हाथ पकड़ रखें। वे कहते हैं कि हम जो करते हैं सब तुम्हारी तरफ से ही करते हैं रे भैया! क्या हालत है यह प्रजा की! इसमें कोई आजादी है? जब दिमाग आजाद हो जायँगे, अपनी-अपनी योजनाएँ बनायेंगे, तभी तो सही माने में आजाद बनेंगे।

नेहरू के बाद क्या होगा? पति बिना स्त्री का क्या होगा? यह अबला है, महिला नहीं। महिला याने महान होनेवाली। अबला—कमजोर—और उसका बल पति है। वह मर जाय, तो उसका क्या होगा? पंडितजी नहीं हैं, तो क्या होगा? कौन उनकी जगह लेगा? क्या डेमॉक्रेसी में ऐसे सवाल आने चाहिए? गाँव-गाँव में उनकी जगह लेनेवाले मनुष्य मिलेंगे। एक गाँव के कारोबार चलानेवाली ग्राम-सभा या समिति होती है—तो हरएक गाँव से एडमिनिस्ट्रेटर्स मिलेंगे। फिर यह सवाल नहीं आयेगा। अकबर मर जाय, तो क्या होगा? याने राज्य-सत्ता में जो सवाल आता था, वही सवाल लोकशाही में आता है। इसका अर्थ यह हुआ कि नाममात्र की लोकशाही, वास्तव में है यह राज्य-शाही।

अगर सच्ची लोकशाही बनानी हो, तो गाँव-गाँव में शक्ति पैदा होनी चाहिए और जनता को स्वयं सारे सेवा-कार्य अपने हाथ में रखने चाहिए और बहुत थोड़े काम सरकार के अन्तर्गत रहने चाहिए।

[गतांक से समाप्त]

जिला कांग्रेस-कार्यकर्ता तथा सरपंचों के साथ

झुंझनू (राज०) ता० २७-३-'५९

सब झगड़े भूलकर ग्राम स्वराज्य की स्थापना के लिए कांग्रेसवाले आगे आयें!

मुझे आप सभी पक्षवाले लोगों से बातचीत करने का अवसर मिलता है। यह मैं अपना सौभाग्य ही मानता हूँ। समस्त पक्षोंवाले मेरे सामने खुले दिल से बातें करते हैं। मैं उनका विश्वासभाजन हो गया हूँ। इसका कारण दूसरा कोई नहीं है, सिवाय इसके कि मेरे मन में सबके लिए समान आदर और प्रेमभाव है। मेरा अपना कोई पक्ष नहीं है। मैं किसी संस्था का सदस्य भी नहीं हूँ। हिन्दुस्तान में रचनात्मक काम करनेवाली संस्थाओं का भी सदस्य नहीं हूँ। सर्व-सेवा-संघ के साथ मेरा बहुत सम्बन्ध आता है, परन्तु मैं उसका सदस्य भी नहीं हूँ।

मानव के पीछे लेबल न चिपकाइये

मनुष्य मनुष्य है। उसके साथ अगर कोई लेबल चिपका रहे, तो उससे मानवीय गुणों की वृद्धि नहीं होती। जहाँ भी कोई लेबल मनुष्य के साथ लगा, वहाँ उसके गुणों में कमी होती ही दिखाई पड़ती है। भिन्न-भिन्न जाति, पंथ, भाषा और यहाँ तक कि धर्म के लेबल भी मानवता के विस्तार में गतिरोध उत्पन्न करते हैं।

यद्यपि यह सच है कि धर्म का विस्तार मानव आत्मा को संकुचित बनाने के लिए नहीं हुआ है। आत्मा को सारी सृष्टि तथा परमेश्वर से जोड़ देना ही धर्म को अभिप्रेत रहा है। धर्म के कारण ही मानव का मानव से भिन्न सृष्टि के साथ एवं जानवरों के साथ हार्दिक प्रीति-सम्बन्ध आया है। दया का भाव भी धर्म के कारण ही मनुष्य में आया है। लेकिन धीरे-धीरे वह संकुचित होने लगा और मानव के विकास में रोड़ा बनने लगा है। जब भिन्न धर्मों के लोग आपस में बैर रखने लगे, तब आखिर कवि को भी लिख देना पड़ा 'मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना।' आपस में बैर रखना मजहब नहीं सिखाता है। लेकिन यह एक दुर्भाग्य की बात थी कि भिन्न-भिन्न धर्मों के लेबिल चिपका लेने से मानवता का संकोच हुआ। इसीलिए लोगों को धर्म से ऊपर उठने की प्रेरणाएँ मिलीं।

हिन्दू धर्म ने एक बहुत ही बड़ी बात कही। वह यह कि मनुष्य को एक अवस्था में अपने धर्म का परित्याग कर देना चाहिए। गीता में भगवान ने कहा 'सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज'—सब धर्मों को छोड़कर मेरी शरण में आ जाओ। हिन्दू धर्म में धर्म का भी संन्यास बताया गया है। इसीलिए संन्यासी जब संन्यास लेता है तो वह वेदों का भी आदरपूर्वक गंगा में समर्पण कर देता है। हर बात की एक सीमा होती है। इसलिए संकोच न हो, इस कारण धर्म का भी परित्याग करना चाहिए। धर्म-परित्याग के सम्बन्ध में हिन्दू धर्म की यह एक अद्भुत कल्पना है। खैर! मैं यही चाहता हूँ कि मानवता को संकुचित करनेवाली दीवारें टूटें। मानवीय गुण बढ़ें। मानवीय गुण बढ़ने से ही राष्ट्रों में जो भीतरी-बाहरी झगड़े हैं, वे मिटेंगे।

कांग्रेस त्याग का कार्यक्रम अपनाएँ

मैं राजनैतिक पक्षवालों के सामने बोलता हूँ, तब उनकी दृष्टि को ध्यान में रखता हूँ। पी० एस० पी० वालों के सामने उनकी दृष्टि में बातें करता हूँ, आर०एस०एस०वालों के सामने उनकी दृष्टि से। कम्युनिस्ट पक्ष में भी मेरे मित्र हैं। मैं उनसे उसी ढंग से बातें करता हूँ और कांग्रेसवालों से भी उसी ढंग से। कांग्रेसवालों के सामने मुझे बहुत बार बोलने का मौका मिलता है। क्योंकि इस संस्था में हमारे बहुत से मित्र हैं। कांग्रेस के बारे में जब सोचता हूँ, तब लगता है कि इस संस्था की इज्जत कैसे बढ़े? कांग्रेस के पीछे साठ साल का पुण्यतम इतिहास है। इसकी पावन स्मृतियाँ

आज भी हमारे मनों में विद्यमान हैं। यह संस्था बड़े भाई की तरह छोटे भाई—याने दूसरे पक्षवालों को साथ ले चले। इस प्रकार यह पक्ष एक रह कर भी पक्षातीत रहने का प्रयत्न करे। कांग्रेसवाले यह समझें कि दूसरों के साथ विचारभेद हो सकता है, परन्तु देश के काम के लिए हम एक हो जायँ और मिल जुल कर काम करें।

आज कांग्रेस के हाथों में सत्ता है। इसलिए इसमें सत्ताभिलाषी लोग दाखिल हो गये हैं। इसी कारण कांग्रेस में झगड़े ही झगड़े हो रहे हैं। भिन्न-भिन्न पक्षों में तो झगड़े हैं ही, लेकिन पक्ष के अन्दर-अन्दर भी झगड़े हैं। हमारे देश में भाषा के झगड़े हैं, जाति के झगड़े हैं, धर्म के झगड़े हैं, मजदूर-मालिक के झगड़े हैं, शरणार्थियों के झगड़े हैं, हरिजन-परिजन के झगड़े हैं और भी न जाने कितने-कितने झगड़े हैं। हिन्दुस्तान एक समस्यालय ही है। इस हालत में हमें ऐसा काम करना चाहिए, जिससे ये सारे झगड़े खतम हो जायँ, हम एक बन जायँ, हमारी शुद्धि हो जाय।

गांधीजी कांग्रेस की शुद्धि के लिए प्रयत्नशील थे। वे कांग्रेस के लिए वनवास का कार्यक्रम रखते थे। वनवास यानी जेल। जेल जाने से थोड़ी तकलीफ होती थी, लेकिन उससे शुद्धि भी होती थी। अब कांग्रेसवालों के सामने वनवास का कार्यक्रम नहीं है। इसलिए अब उनकी शुद्धि के लिए क्या करना चाहिए? मेरा विश्वास है कि कांग्रेस की शुद्धि के लिए कोई योजना बनाई जाय तो यह संस्था देश को आगे ले जानेवाली सिद्ध होगी, अन्यथा इससे देश की असेवा होनेवाली है।

नागपुर प्रस्ताव ग्रामदान की दिशा में एक कदम

हमारे देश का सबसे बड़ा मसला भूमि का है। आठ साल से हम उस मसले को मिटाने के लिए पैदल यात्रा कर रहे हैं। येलवाल में भिन्न-भिन्न पक्ष के नेता इकट्ठे हुए। उन्होंने चर्चा की और अन्त में यह फैसला किया कि ग्रामदान का कार्य देश के हित में है। इस काम को बढ़ावा देना चाहिए। मैं आशा करता था कि कांग्रेस के लोग अब इस काम को पूरी तरह से उठा लेंगे। इससे उन्हें ताकत मिलेगी और उनकी शुद्धि भी होगी।

किसी कांग्रेसी के पास कुछ जमीन हो तो उससे पूछा जाय कि उसने भूदान में जमीन दी है या नहीं? अगर नहीं, तो यह जाहिर करना चाहिए कि वह कांग्रेस में रहने लायक नहीं है।

आज कांग्रेस के पास कोई खास त्याग का कार्यक्रम नहीं है। चार आना देने से वोटिंग का अधिकार मिल जाता है। लेकिन इतने से देश का काम होने वाला नहीं है। नागपुर कांग्रेस में खेती के बारे में प्रस्ताव पास हुआ। अब यह कहा जा रहा है कि जो लोग वह प्रस्ताव मान्य करेंगे, वे ही कांग्रेस के सदस्य रहेंगे। जो इस प्रस्ताव को मान्यता नहीं देंगे, वे कांग्रेस में नहीं हैं, ऐसी घोषणा की जायगी। वह प्रस्ताव ग्रामदान की दिशा में छोटा-सा कदम है।

ग्रामदान जितना आसान है, उतना आसान नागपुर का प्रस्ताव नहीं है। एक तरह से देखा जाय, तो उसमें कोई खास बात भी नहीं है। कोआपरेटिव सर्विस करें या अलग-अलग खेती करें, मालिकों को उस-उस हिसाब से मुनाफा मिल ही जायगा। ग्रामदान में यह झमेला नहीं है। ग्रामदानी गाँव में लोग अपना इन्तजाम स्वयं करेंगे। सरकारी कानून दखल नहीं देंगे। यथासम्भव सरकार से मदद मिलेगी। इसीलिए हमने इसे 'डिफेन्स मेजर' कहा है। इससे देश की रक्षा होगी।

ग्रामदान ही गाँव को बचायेगा

मान लो, कल कहीं लड़ाई छिड़ जाती है तो क्या उससे देश के आयात-निर्यात में बाधा नहीं पड़ेगी? अनाज के दाम बढ़ जायँगे। सन् १९४३ में दूसरे महायुद्ध के समय बंगाल में तीस लाख लोग अन्न के बिना मर गये। वैसी नौबत फिर भी आ सकती है। देश की उस बदली हुई परिस्थिति में कौन बचायेगा? पहले तो अंग्रेजों को गालियाँ देकर हम लोग बरी हो सकते थे। लेकिन अब किसे दोष देंगे? इसलिए ग्रामदान-मूलक ग्रामस्वराज्य बनने से ही भूमि सबकी बन जायगी। गाँव का गल्ला गाँव में रह जायगा। फिर आप गाँव को बचा सकते हैं।

ग्रामदान के बाद ग्रामोद्योगों को बढ़ावा देना होगा। कच्चे माल का पक्का माल भी वहीं बनाना होगा। गाँव में कोई भूखा रहे, इसकी जिम्मेवारी गाँवसभा को उठानी होगी। सारी जमीन गाँव की होगी। लोग चाहेंगे तो छोटी-छोटी जमीनें लेकर अलग खेती करेंगे। जो फसल आयेगी, वह बाँट कर खायेंगे। गाँव की एक दुकान होगी। इसी दूकान के जरिये गाँव का आयात-निर्यात चलेगा। गाँव को बचाने का अब यही एक तरीका है।

आपका काम मेरी मदद

मैं आठ साल से इसी विचार को लेकर घूम रहा हूँ। विदेशी लोग आते हैं। मेरे साथ रहते हैं। इस आन्दोलन का अध्ययन करते हैं और भविष्य की एक आशा लेकर जाते हैं। यह आन्दोलन एक आध्यात्मिक और नैतिक शक्ति प्रगट कर रहा है। इससे दुनिया में शांति की शक्ति निर्माण करने की राह खुल गयी है। अब आप और हम मिल कर यह काम करेंगे, तो मुझे विश्वास है कि हमें सफलता मिलेगी। आपसे मेरी यह आरजू है कि यह काम आप अपना समझिये और मुझसे मदद लीजिये। आपका काम और मेरी मदद। ऐसा होने से ही कांग्रेस की इज्जत बढ़ेगी। इस काम को पी० एस० पी० पसन्द करती है। कम्युनिस्ट भी पसन्द करते हैं और जनसंघी भी पसन्द करते हैं।

जनसंघवाले गलतफहमी में न रहें

जनसंघवालों के मन में जरा कुछ गलतफहमी है। वे समझते हैं कि ग्रामदान में जमीन जबर्दस्ती छीनी जायगी। सहकार लादा जायगा। बड़े मालिकों को लाभ होगा। लेकिन यह बिलकुल गलत बात है। गाँववाले जैसा चाहेंगे, वैसा होगा। अगर वे चाहें, तो कुछ जमीन सामूहिक रहेगी, बाकी सब अलग-अलग बाँट दी जायगी। अलग-अलग गाँवों में अलग-अलग तरह के प्रयोग भी किये जा सकते हैं। उसके बारे में मुझे न कोई आग्रह है और न कोई उज्र। मैं तो सिर्फ इतना ही चाहता हूँ:

जमीन गिरवी न रखी जाय।
व्यक्ति की मालकियत न रहे।
सरकार में मालकियत ग्राम-सभा की मानी जाय।
इनीशियेटिव्ह लोगों के हाथों में रहे।

आज जो ग्राम पञ्चायतें बनी हैं, वे ग्रामस्वराज्य होने से पहले बनी हैं। इसलिए उनमें अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक के झगड़े मिटें। सारा काम सर्वसम्मति से हो। किसी काम में सर्वसम्मति नहीं मिलती है, तो थोड़े समय के लिए उस काम को

स्थगित रखा जाय। फिर सबकी सम्मति मिल जायगी। जान-बूझकर कोई काम में गतिरोध उत्पन्न नहीं करेगा।

इस काम में किसी प्रकार की जबर्दस्ती नहीं है। जबर्दस्ती से काम करवाना अपनी सभ्यता और सर्वोदय-विचार के खिलाफ है। इसीलिए हमारा काम लोकमान्य हुआ। कांग्रेस इस काम को उठाये और दूसरे पक्षवालों से सहयोग मांगे, तो सबकी इज्जत बढ़ेगी। आज जो दूर-दूर हैं, वे नजदीक आयेंगे। इससे शान्तिमय क्रान्ति की राह खुलेगी और अखिल विश्व को भारत एक नया रास्ता दिखा सकेगा।

०००

प्रार्थना-प्रवचन

मित्ताथल (पंजाब) ७-४-'५९

राजनैतिक झगड़े और आपसी हित-विरोधों को मिटाकर सर्वोदय सिद्ध करें!

आज हमारी पंजाब-यात्रा को एक सप्ताह हो रहा है। इतने दिनों में सारे प्रांत का अनुभव तो क्या आयेगा? लेकिन थोड़े में ही बहुत समझने की एक शक्ति होती है। जो निरीक्षण करने की आदत रखते हैं, उनको यह शक्ति हासिल होती है। कुछ पता चल गया है कि यहाँ किस प्रकार का काम हो सकता है।

राजनीति समस्या को सुलझा नहीं सकती

यहाँ कुछ कमियाँ भी हैं और कुछ खूबियाँ भी हैं। उन दोनों को ध्यान में लेकर सोचना होगा और काम करना होगा। हम मानते हैं कि यहाँ का काम तब बढ़ेगा, जब यहाँ ब्रह्मविद्या आयेगी। पंजाब की जो शक्ति है, वह उपनिषद् और गीता की है। उस शक्ति को जगाये बिना पंजाब का काम नहीं होगा। राजनैतिक झगड़ों की बातें तो यहाँ भी हैं और दूसरी जगह भी हैं। आज ही हमने एक भाई से कहा कि राजनैतिक झगड़े में पड़ना, इस विश्वास से कि इससे देश का काम होगा, बहुत गलत खयाल है। आज जो उठा, वही राजनीति में पहुँचता है। सारे अखबार राजनैतिक झगड़ों से भरे हुए रहते हैं। जब तक यही चलता रहेगा, तब तक अपने देश की बात सुलझेगी नहीं।

शहरों और देहातों के बीच दीवारें खड़ी हैं। देहात के लोगों को पता ही नहीं है कि बाहर क्या-क्या झगड़े चल रहे हैं? कहाँ कैसी उलझनें हैं? राजनैतिक पक्षवालों के और सरकार के क्या-क्या सवाल हैं, इस बात का ज्ञान भी देहातियों को नहीं है। फिर भी देहात के काम चलते ही हैं।

आपका यह गाँव करीब ६०० साल का बसा हुआ है। ऐसे पुराने शहर हिंदुस्तान में बहुत कम हैं। चार सौ साल पहले बम्बई कहाँ थी? एक छोटा-सा देहात था। मद्रास भी इसी तरह कोई ४००, ५०० साल का है। दिल्ली, काशी आदि कुछ पुराने शहर हैं। लेकिन आज के जो नये शहर हैं, वे ५००, ६०० साल पहले देहात ही थे, उनकी कोई हस्ती नहीं थी। देहात में प्राचीन सभ्यता मौजूद है। हमारी सभ्यता की असलियत देहातों में है। इसीलिए देहात के लोग हमारी बात को समझ सकते हैं। वह बात उनकी अंतरात्मा में पड़ी है। उसे प्रकट करने की बात है। शहरवाले देरी से समझते हैं, लेकिन देहातवालों को समझने में देरी नहीं लगती। लेकिन हम उनके पास पहुँचते नहीं हैं। असल में पहले ज्ञानी लोग देहातों में ही रहते थे। उपनिषद् आदि ग्रंथों का निर्माण जंगल में ही हुआ। रविन्द्रनाथ ने लिखा है कि अपनी 'अरण्य-संस्कृति' है। उसमें ब्रह्मविद्या का विचार है। इसलिए ब्रह्मविद्या के बिना पंजाब की आत्मा नहीं जागेगी।

पंजाब में सर्वोदय शीघ्र हो सकता है

पंजाब खुशहाल प्रदेश है। यहाँ के किसान भी खुशहाल हैं। आज एक भाई कह रहे थे कि यहाँ जमीन कम है और खराब है। मैंने कहा, अगर यहाँ भी जमीन कम है तो हिंदुस्तान में ज्यादा जमीन कहाँ होगी? केरल में हरएक वर्गमील के पीछे १२०० की जनसंख्या होती है। उस हिसाब से यहाँ जमीन ज्यादा है। यहाँ गाय का दूध भी बहुत मिलता है। इसलिए दूसरे सूबों से यहाँ की मालीहालत अच्छी है। कुल मिला करके हिन्दुस्थान की मालीहालत अच्छी नहीं है, लेकिन यहाँ की कुछ अच्छी है। जहाँ मालीहालत बहुत खराब होती है, वहाँ मनुष्य को आत्मनिरीक्षण की बातें नहीं सूझतीं। जहाँ का जीवनमान, जहाँ की मालीहालत बहुत ऊँची होती है, वहाँ भी आध्यात्मिक विचार मनुष्य को नहीं सूझता है। ऊँचे विचार नहीं सूझते हैं। सुबह तो किसी तरह खाना खा लिया, लेकिन अब शाम को क्या खाना है—जहाँ यही एक चिन्ता करनी पड़ती है, वहाँ ऊँचे विचार कैसे सूझ सकते हैं? ऊँचे विचार कहाँ सूझते हैं। जहाँ बहुत ऊँची हालत न हो और बहुत नीची हालत भी न हो। बीच की हाल हो, वहाँ ऊँचे विचार सूझते हैं। ऐसी बीच की हालत आज पंजाब में है। इसलिए यहाँ ब्रह्मविद्या से काम होगा।

हम सब एक परमेश्वर की संतान हैं। हम सब एक ही हैं। हम अलग-अलग हैं, यह विचार ब्रह्मविद्या के खिलाफ है। मैं कहना यह चाहता हूँ कि जमीन का एक निमित्त है और उस निमित्त से हम सब एक हैं—यही विचार फैलाना चाहता हूँ। जमीन का बँटवारा तो दस साल बाद फिर से करना ही होगा। यह विचार बार-बार करना होगा। यह विचार आज भी है और १० साल बाद फिर से होगा। १० साल बाद जमीन का रकबा कम होगा और संख्या बढ़ेगी। इसलिए फिर से बँटवारे का सवाल आयेगा।

आज यहाँ के भाई कहते थे कि हमारे खानदान के ६०, ७० परिवार हैं। क्या हम सबका एक परिवार बनाया जाय? मैंने कहा कि सब मनुष्य-समाज ही एक खानदान है। हम अगर अपना अलग खानदान बनायेंगे, तो आज के विज्ञान के जमाने में नहीं टिकेंगे। हम सारे मानव एक हैं और मानव के नाते सब में एक ही प्रभु विराजमान है, यह देखना चाहिए। नानक ने कहा है: "सबरमरहिया प्रभु एकै, पेखी पेखी नानक बिग साई।" यह हमारी जमात है, हम ब्राह्मण हैं, क्षत्रिय हैं, यही हमारा खानदान है, इस तरह गलत विचार नहीं करना चाहिए। इस विचार से दिल के टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं। सारे मानव मात्र ही एक हैं। इसीलिए हम 'जयजगत्' कहते हैं। अभी हमारे साथ जो यह भाई हैं, वे हिन्दुस्तान के नहीं हैं, परदेश के हैं। इस ८ साल की हमारी पदयात्रा में अनेक देशों से ऐसे कितने ही भाई आये हैं। वे क्या देखना चाहते हैं? क्या यहाँ जमीन बाँटी जाती है, उसे देखने को आते

हैं ? क्या उसमें उनको दिलचस्पी है ? नहीं, उसमें दिलचस्पी नहीं है। बाबा एक बुनियादी, नैतिक, आध्यात्मिक चीज बनाना चाहता है और उसके आधार पर समाज-रचना बनाना चाहता है और उसी आधार पर जमीन माँगता है। इसलिए बाहर के लोग देखने के लिए आते हैं। दबाव से काम तो सारे दुनिया में होता है, जैसे तिब्बत में हुआ। चीन ने उसे हजम कर लिया, दबा ही लिया ! और क्या बात है ? इस तरह छोटे-छोटे देशों को दबा देना ही कम्युनिस्टों का रवैया रहा है। दुनिया में सर्वत्र दबाव से ही काम चल रहा है। उसमें से छुटकारा होना चाहिए। इसलिए अब कोई अच्छी राह मिले, जिससे प्रेमपूर्वक सारे मसले हल हों, ऐसी चाह दुनिया को हो रही है। जमीन बँटी और जमीन मिली पर कैसे मिली ? प्रेम से मिली, इस बात का महत्त्व है। इसीलिए परदेश के लोग देखने आते हैं। यह प्रेम की बात हम लोगों के दिल में तब पैठेगी, जब हम सब एक ही परमेश्वर की सन्तान हैं। हम सब एक हैं, एक ही प्रकाश हम सबके अन्तर में है हम सब एक आत्मा हैं, इस विचार से हमारे कार्यकर्ताओं के दिल भर जायँ, तो उनकी जबान में ताकत आयेगी।

विज्ञान-युग में मतभेद मिटाने होंगे

आठ साल से हमारी पदयात्रा चल रही है। इसमें कभी जमीन मिलती है, कभी नहीं भी मिलती है। लेकिन हमारे दिल पर उसका कोई असर नहीं होता है। हम इस काम को भगवान का काम मानकर ही कर रहे हैं। इससे हमारी ताकत बढ़ रही है। अन्दर से एकता महसूस होनी चाहिए। हम सर्वत्र प्रेम फैलाना चाहते हैं। हम सबको यह महसूस होना चाहिए कि अन्दर से हम सब एक हैं। विज्ञान के युग में इन भेदों को हम कायम रखेंगे, तो झगड़े बढ़ेंगे। जितना दुःख बढ़ेगा, उतने झगड़े बढ़ेंगे। जितना सुख बढ़ेगा, उतने झगड़े बढ़ेंगे अगर हम अन्दर से एकता महसूस नहीं करेंगे। अमेरिका में और रूस में आज शान्ति नहीं है। वहाँ भी झगड़े हैं, क्योंकि उन देशों में दुःख भी बढ़ रहा है, सुख भी बढ़ रहा है। वे लोग अन्दर से एकता महसूस नहीं करते हैं। उन्हें परस्पर में एक-दूसरे पर अविश्वास है। यह झगड़े तब तक नहीं मिटेंगे, जब तक अन्दरूनी एकता का एहसास मन में महसूस नहीं करेंगे। इसलिए हमने दो ही शब्द बनाये हैं "एक बनो और नेक बनो।" एक बनोगे तो नेक बनोगे ही। फिर हमें नेक बनो, कहने की जरूरत नहीं रह जायगी। एक बनो कहने से कार्य हो जाता है। एक बनोगे तो नेक ही बनोगे।

अपने देश में अनेक भाषाएँ हैं, अनेक धर्म हैं, अनेक जातियाँ हैं, उनमें एकता आती है, तो बहुत बड़ी बात हो जाती है। और एकता के साथ हम नेक बनेंगे ही। अगर छोटी जमात होती तो नेक बनो कहने की जरूरत थी। लेकिन हमारा इतना बड़ा देश है और उसमें अनेक धर्म, अनेक भाषा, अनेक पंथ हैं। इतनी विशाल जमात अगर एक होगी, तो साथ-साथ नेक भी होगी। इस विचार से कार्यकर्ता घूमेंगे तो इसमें कोई शक नहीं है कि पंजाब के लोग जाग जायेंगे।

हम ग्रामदान करो ऐसा कहते हैं, लेकिन हमारा कहना यह है कि आप प्रेम करो और प्रेम से रहो। आप चाहे छठा हिस्सा न दीजिये, ग्रामदान भी न दीजिये, लेकिन अपने गाँव में प्रेम प्रगट कीजिये। इसीसे आपने पहला कदम उठा लिया, ऐसा हम मान लेंगे। प्रेम से जो बात होगी, वह पक्की होगी। आज ही एक भाई ने कहा कि इस गाँव में पोलिटिकल पार्टीज़ के झगड़े हैं। यह सुनते ही मुझे सदमा पहुँचा। वे कह रहे थे कि ग्राम-पंचायत का एक चुनाव हुआ और यहाँ पक्षभेद हो गये। इस प्रकार की पंचायत झगड़े पैदा करे तो वह भारत की पंचायत नहीं है। आज की जो पञ्चायत है वह बाहर की है। भारत में एक जमाने में जो पञ्चायत थी, उसमें और इसमें जमीन-आसमान का फर्क है। आज का जो तरीका है, वह भारतीय तरीका नहीं, अभारतीय तरीका है। भारत का तरीका था "पञ्च बोले परमेश्वर।" आज तो ४ विरुद्ध १ प्रस्ताव पास करते हैं। ३ विरुद्ध २ का भी प्रस्ताव पास होता है। इसमें श्रद्धा नहीं पैठती है। दिल के टुकड़े होते हैं और यह भावना होती है कि तीन की चलेगी, दो की नहीं चलेगी। फिर दोवाले तीनवालों के काम में रुकावट डालेंगे। इस मेजॉरिटी और मायनॉरिटी के झगड़े से दुनिया तंग आ गयी है। जहाँ अनेक धर्म, अनेक भाषा और अनेक जातियाँ हैं, वहाँ यह बात नहीं चलेगी। इंग्लैण्ड में एक ही धर्म है, एक ही भाषा है। वहाँ जातिभेद ही नहीं है। वहाँ ४०० साल से डेमॉक्रेसी चल रही है और यहाँ अभी-अभी डेमॉक्रेसी चलने लगी है। वहाँ सब प्रकार की समृद्धि है, यहाँ सब प्रकार का दारिद्र्य है। इसलिए इंग्लैण्ड के साथ इस देश की तुलना नहीं हो सकती है। भारत की अपनी एक सभ्यता है। आज का इलेक्शन का जो तरीका है, वह भारतीय सभ्यता के अनुकूल नहीं है। इसलिए भारतीय सभ्यता के आधार पर हम काम करेंगे, तो हमारा काम नहीं बिगड़ेगा। नहीं तो हम छिन्न-विच्छिन्न हो जायेंगे।

हमने ग्रामदान की बात की है, वह भारतीय सभ्यता के अनुकूल है। ग्रामदानी गाँव में ग्राम-सभा होती है। ग्राम-सभा सबकी संमति से काम करती है। कोई भी प्रस्ताव तभी पास होगा, जब एक भी मत विरुद्ध नहीं जायगा। इस तरीके से काम करेंगे, तो आपस में फूट नहीं होगी। पश्चिम से मेजॉरिटी मायनॉरिटी का विचार यहाँ आया है, इसीसे गाँव-गाँव में फूट पड़ी है।

हमारे हित-विरोध मिटें

हम कर्तव्य के बदले हक की बात करते हैं। विद्यार्थियों के हक, शिक्षकों के हक, बाप के हक, बेटे के हक, पति के हक, पत्नी के हक ! अखिल भारतीय संघ बनाते हैं और अपने-अपने हितों की रक्षा करते हैं। विद्यार्थियों का हित शिक्षकों के हित के विरुद्ध है और बाप का हित बेटे के हक के विरुद्ध है। अखिल-भारत बूढ़ों के संघ के खिलाफ अखिल-भारत जवान-संघ ! अखिल भारत बाप के संघ के विरुद्ध अखिल भारत बेटा-संघ। याने घर-घर में आग लगेगी और घर बटेगा। अपने-अपने हित के लिए कशमकश चलेगी, इसलिए यह पश्चिम का तरीका हमें नहीं लेना चाहिए। पश्चिम से कई अच्छी बातें हम सीख सकते हैं। उनका विज्ञान आगे बढ़ा हुआ है। उनमें व्यवस्था-शक्ति है। उनकी ज्ञान-पिपासा है। वे ज्ञान के लिए नयी-नयी जगह जाकर नये-नये खोज करके अपने को खतरे में झोंक देते हैं। ऐसी अच्छी बातें हमें उनसे सीखनी चाहिए और अपनी सभ्यता के अनुसार यहाँ काम करना चाहिए। उसके लिए भी एक बनने की जरूरत है। अपने पास जो जमीन है, वह बाँटो। संपत्ति है तो वह बाँटो। श्रम करने की शक्ति है तो समाज को अपना श्रम दो। व्यापक आत्मज्ञान बनाओ और खूब अध्ययन करो।

सब एक हृदय हों

गाँवों में जो सबसे दुःखी है, उसके दुःख को हम जब तक नहीं हटाते हैं, तब तक हम में (गाँव में) एकता नहीं आयेगी। जो सबसे नीचे है, हमें उसकी सेवा में जाना चाहिए। अपने शरीर की रचना में पाँव सबसे नीचे है, हाथ ऊपर है और सिर भी ऊपर है। पाव में काँटा लगता है, तब हाथ उसकी सेवा में दौड़ता है। ऊँच, नीच भेद नहीं करता है। इसीलिए हमारे सारे शरीर में एकता है। उस एकता के कारण हमारा सारा शरीर चल रहा है। हाथ, पैर, मस्तक आदि सभी अवयव एक दूसरे को मदद करते हैं। जिगर में जो यंत्र है, वह सर्वत्र खून भेजता है। पाँव में भी खून भेजता है और शिर में भी खून भेजता है। इस तरह शरीर के यंत्र में सर्वत्र प्रबन्ध रहता है। यह प्रबन्ध अच्छा नहीं रहा, तो मरने की नौबत आती है। पाँव ठंडे हो जाते हैं तो यह समझ लेना चाहिए कि पाँव में खून नहीं पहुँच रहा है। शरीर में सर्वत्र खून पहुँचाने का यंत्र सतत काम करता है, उसी पर शरीर का काम चलता है।

फुटबॉल का खेल चलता है। उस समय मेरे पास बॉल आ गया तो अगर मैं उसे अपने ही पास रख लूँ तो क्या खेल जमेगा? बॉल को फौरन लात मारकर हम दूसरी ओर भेज देते हैं। उसी तरह समाज की संपत्ति हमेशा खेलती रहनी चाहिए। इस हाथ से उस हाथ जानी चाहिए। अपने पास जो भी है, वह फौरन दूसरे को देना चाहिए। जिन्दे शरीर का यही लक्षण है कि उसमें खून इधर से उधर जाता रहे। खून एक ही जगह पर जम जाय तो समझना चाहिए कि शरीर में कुछ खराबी आयी है। जब तक खून सब अवयवों को पहुँचता रहता है, तब तक शरीर अच्छा चल रहा है, ऐसा समझा जाता है। इसी तरह गाँव में होना चाहिए। सारा ग्राम-समाज एक बदन है और उसमें एक रूह काम कर रही है। दिमाग अलग-अलग हैं, लेकिन सबका दिल एक है। सब लोग एक साथ बैठते हैं। एक-दूसरे से अलग-अलग विचार रखनेवाले परस्पर विचार-विनिमय करते हैं। विचार में कुछ दोष हों, तो उन्हें दूर करते हैं। सब एक साथ एक दिल से काम करते हैं, ऐसा होना चाहिए। ग्रामदानी गाँव में ऐसा ही होगा।

पंजाब की असली चीज उपनिषद् और गीता है। उनका असर आज जीवन पर नहीं है। वे चीजें आज छिपी हुई हैं। उन्हें बाहर लाना होगा। उसके बिना काम नहीं होगा। बाहर की चीज़ लायेंगे तो हम खतम हो जायेंगे। यहाँ जो गुरुद्वारा है, उसके झगड़े याने मेजॉरिटी मायनॉरिटी के ही झगड़े हैं। धर्म के काम में भी मेजॉरिटी मायनॉरिटी का बँटवारा हो गया है। अल्पमत, बहुमतवाला यह बाहरी तरीका हमारे आपस में फूट पैदा करेगा। इसलिए हमें इस झगड़े में नहीं पड़ना चाहिए और सर्व-सम्मति से काम करना चाहिए।

पंजाब की स्थिति को देखकर जो विचार सूझे, वह मैंने आपके सामने रखे। हमारे जीवन में हमें ब्रह्मविद्या लानी चाहिए। उसके आधार पर ही हमें काम करना चाहिए। हमारे कार्यकर्ता के जीवन में यह ब्रह्मविद्या आयेगी और हम सब एक-दूसरे के लिए मर मिटेंगे—यह बात होती है। तो जैसे दीपक से किरणें फैलती हैं, वैसे ही हमारा प्रकाश फैलेगा। ◆◆◆

करनेवाला कोई दूसरा ही है

जिस दिन हमें पहला भूदान मिला, उस रात को ३ घन्टे तक मुझे नींद नहीं आयी। मैं सोचने लगा कि इस घटना के पीछे ईश्वर का क्या इशारा है? क्या इस तरह हम लोगों के पास पहुँच कर जमीन माँगते फिरेंगे, तो हिन्दुस्तान की भूमि-समस्या हल हो जायगी? क्या यह काम मेरे जैसा कमजोर आदमी कर सकेगा?

तभी अन्दर से एक आवाज आयी—अरे, करनेवाला तू होता कौन है? करता तो कोई दूसरा ही है। फिर तू क्यों अभिमान रखता है?

पैगम्बर मुहम्मद साहब अपने दो साथियों के साथ जंगल में घूम रहे थे। दुश्मनों की सेना उनकी तलाश में उनका पीछा कर रही थी। साथवाले दोनों व्यक्ति घबरा गये। वे पूछने लगे कि 'अब हमारी क्या हालत होगी? इतनी बड़ी सेना का हम तीन आदमी कैसे मुकाबला कर सकेंगे?' मुहम्मद साहब ने जवाब दिया—'तुम नहीं जानते, हम तीन नहीं चार हैं। हमारा सारा काम तो वह चौथा ही कर रहा है।

अनेक भक्तों का भी यही अनुभव है।

हमने भी उसीके नाम से काम आरम्भ कर दिया। होते-होते यह काम कहाँ तक बढ़ गया है; वह आप सभी जानते हैं।

मनुष्य विचार से परे हो जाता है, उसमें विशारद हो जाता है, तो उसे आध्यात्मिक प्रसाद मिलता है। वह एक ऐसी चीज है, जो समाधि में आती है।

निर्विचार भूमिका से एक शक्ति प्राप्त होती है और विचार-मय भूमिका से दूसरी शक्ति। लोगों के काम के लिए विचार-शक्ति है और अपने काम के लिए निर्विचार-शक्ति है, जो अपने को ऊँचे अनुभव में पहुँचाती है। विचार-शक्ति मनुष्य के उपयोग के बारे में बताती है।

कुछ चिंतन ऐसा भी है, जो उसी दिन के काम में आता है। कुछ ऐसा भी है, जो उसी दिन काम में नहीं आता है, कुछ देरी से उसका उपयोग होता है।

◆◆◆

अनुक्रम

१. हमारा आन्दोलन दुनिया में शान्ति और करुणा की...
चुरू २२ मार्च '५९ पृष्ठ ३३७
२. सब झगड़े भूलकर ग्राम स्वराज्य...
झुंझनू २७ मार्च '५९ ,, ३४०
३. राजनैतिक झगड़े और आपसी हित-विरोध...
मित्ताथल ७ अप्रैल '५९ ,, ३४२

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी।